: प्राक्कथन :

हिन्दी उपन्यास साहित्य में जैनेन्द्रकुमार का स्थान महत्वपूर्ण है । प्रेमचन्द पूर्व हिन्दी उपन्यासों का उतना विकास नहीं हुआ था, सिर्फ उपन्यास मनोरंजन प्रधान था । उस समय के लेखकों ने तिलस्मी ऐयारी उपन्यास साहित्य की रचना की थी । उसके बाद प्रेमचन्दजी का हिन्दी साहित्य में आगमन हुआ । तो वे उपन्यास सम्राट बन गये । उन्होंने सबसे प्रथम प्रयास यह किया कि उपन्यास मनोरंजन का साधन नहीं, बल्कि हमारे सामाजिक तथा वैयक्तिक जीवन की अभिव्यक्ति है, इस बात को दोहराया और उन्होंने सामाजिक उपन्यास लिखें । उन्होंने अपनी रचना में आदर्शोन्मुख यथार्थवाद स्थापित किया । उसके बाद हिन्दी उपन्यास साहित्य में बंगला तथा अंग्रेजी के अनुवादित उपन्यास आये । इन उपन्यासों पर मनोविश्लेषण शास्त्र का प्रभाव मिलता है । यह प्रभाव माननेवाले पहले उपन्यासकार थे, जैनेन्द्रकुमार । इन्होंने सबसे पहले पाठकों का ध्यान समाज से हटाकर व्यक्ति पर केन्द्रित किया ।

मुझे जैनेन्द्रकुमार का अध्ययन करने का मौका मिला । " कल्याणी " उपन्यास से प्रभावित होकर मैंने लेखक की सभी औपन्यासिक कृतियों को पढा । उसके बाद मेरे मन में जैनेन्द्र साहित्य के बारे में आकर्षण पैदा हो गया ।

आज जब मुझे लघु-शोध-प्रबन्ध का विषय चुनने का मौका मिला तो अनायास मेरे सामने " जैनेन्द्र " साकार हो उठे । क्यों, कि उनके साहित्य में जो सामाजिक समस्याएँ चित्रित है, वह अत्यन्त महत्वपूर्ण है,

इसलिए मैंने इस विषय का प्रस्ताव गुरुवर्य डा. एम. पी. खाडिलकरजी के सन्मुख रखा, तो आपने हामी भर दी तथा विषय के गहराई के प्रति मुझे सचेत भी किया । अनुसन्धान के विषय का शीर्षक " जैनेन्द्रकुमार के साठोत्तरी उपन्यासों का अनुशीलन यह है । "

जैनेन्द्रकुमार मानव जगत् के सफल चितेरे हैं, जीवन के घात-प्रति-घातों से जूझते-जूझते उन्होंने समाज के व्यापक धरातल को अति सूक्ष्मता से देखा है । सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक, साहित्यिक परिस्थितियों के साथ-साथ कानूनी स्थिति और इन परिस्थितियों में उलझे हुए पात्रों का मनोवैज्ञानिक और यथार्थ चित्र उन्होंने अपने उपन्यासों में चित्रित किये है, समाज के विभिन्न धरातल के लोग उनके उपन्यासों में पाये जाते हैं । साधारण से साधारण आदमी से लेकर उच्चतम पदधारण करनेवाले आदमियों तक उनकी दृष्टि पहुँच चुकी है, उनके पात्र असामान्य होने से उनके द्वारा असाधारण कार्यव्यापार घटित होते हैं, पैसों की कमी उन पात्रों के पास नहीं हैं, फिर भी वह सधन नहीं हैं । जैनेन्द्र का मौलिक ऐसा साहित्य है, जिसमें सामाजिक परिवर्तन की अपेक्षा है और इसलिए उनके साहित्य पर विभिन्न दृष्टिकोणों से अनुसन्धान हुआ है । उसमें नैतिकता, आर्थिक अभाव इन बातोंपर सोचते वक्त समाज से निर्मित रीति-रिवाज, परम्परा इसमें मनुष्य कैसा चक्कर खाता है, और उसकी परिणति क्या होती है ? क्यों होती है ? किसतरह होती है ? यह बतलाने का प्रयास जारी रखा है, उसमें जिसे समाज और शासन अपराधी, दोषी बताते हैं, इस बात का समाज, और शासन जिम्मेदार है या नहीं ? यह महत्वपूर्ण सवाल उठाया है । समाज में ही परिवार टूटने की समस्या आ जाती है, और जब परिवार टूटकर कहीं गलत रास्ते पर एकाध मनुष्य जाता है, तब समाज के नियम, और कानून के

नियम उसे पकडकर उस पर अन्याय, अत्याचार किस तरह करते हैं, ऐसी दयनीय स्थिति उनके जीवन में जब आती है, तब जैनेन्द्र के प्रारंभिक उपन्यासों में पात्र आत्महत्या करके अपनी जिन्दगी खत्म करते थे, लेकिन साठोत्तरी उपन्यासों में सामाजिक परिस्थितिमें परिवर्तन आ गया है, प्रेमचन्द और जैनेन्द्र के प्रारंभिक उपन्यासों में आत्महत्या करनेवाली नारी अब विद्रोही, और क्रान्तिकारी बन गयी है । इन तमाम प्रश्नों को मद्दे नजर रखते हुए, मैंने यही बताने का प्रयास किया है, कि ऐसे कानून को, परंपरा की आवश्यकता आज है, या नहीं ? इन सवालों के जबाब खोजने के लिए मैं ने अनुसन्धान के लिए यह विषय निश्चित कर दिया है, उस में निम्नलिखित अध्याय हैं -

प्रथम अध्याय :- उपन्यासकार जैनेन्द्र । व्यक्तित्व एवं कृतित्व का सामान्य परिचय दिया है । जिसके कारण पाठकों को लेखक की कृतियों का सामान्य ज्ञान प्राप्त हो जाय ।

दूसरा अध्याय :- जैनेन्द्रकुमार के साठोत्तरी उपन्यासों का संक्षिप्त परिचय ।

तीसरा अध्याय:- इस अध्याय में लेखक पर जो विभिन्न प्रभाव हमें दिखायी देते हैं, उनका विवेचन किया है —

[१] जैन दर्शन, गाँधी - विचारधारा और जैनेन्द्र ।
[२] जैनेन्द्र पर फ्रायड का प्रभाव ।
[३] जैनेन्द्र के प्रेरणा-स्त्रोत - रवीन्द्र ।
[४] शरदचन्द्र चटर्जी का जैनेन्द्र पर प्रभाव ।
[५] जैनेन्द्र पर गेस्टाल्टवादी औपन्यासिक तंत्र का प्रभाव ।

चौथा अध्याय:- इस अध्याय में लेखक के साठोत्तरी उपन्यासों में विभिन्न समस्याएँ --

अ] पारिवारिक । ब] सामाजिक ।

क] आर्थिक । ख] राजनीतिक ।

ग] समकालीन ।

आदि का अध्ययन प्रस्तुत किया है ।

पाँचवा अध्याय:- लेखक के प्रारंभिक उपन्यासों में तथा साठोत्तरी उपन्यासों में चित्रित समस्याओं का तौलनिक अध्ययन यह इस तरह किया है, कि लेखक का उपन्यास लेखन १९२९ से १९८५ तक रहा है, तो उसमें आरंभिक और साठोत्तरी समस्याओं में कुछ फर्क हुआ है, या समस्याएँ और ही बढकर उसमें तीव्रता आ गयी है, इसपर सविस्तर चर्चा की है, साथ ही साथ ये सभी समस्याएँ आज की समस्याओं से मिलती जूलती है या नहीं ? यह बताने का प्रयास जारी रखा है ।

:- उपसंहार के रूप में पेश है, साथ ही संदर्भ ग्रिन्थ सूची है ।

इस प्रकार इन तमाम महत्वपूर्ण बातों का अध्ययन करने के इस प्रयास में मेरे गुरुवर्य - डा. मोनाक्षी खाडिलकरजी का अध्ययन संपन्न पथ प्रदर्शन बहुत बडा सहायक सिध्द हुआ है । वे अत्यधिक व्यस्त रहते हुए भी गुरुवर्य डा. खाडिलकरजी ने एक सफल निर्देशक के रूप में मुझपर जो ऋण किये हैं, उस से मुक्त होना केवल असंभव है ।

शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर के हिन्दी विभाग अध्यक्ष डा. पी. एस. पाटीलजी तथा अवकाश प्राप्त हिन्दी विभाग अध्यक्ष डा. व्ही. के. मोरेजी और प्रा. एम. के. तीवलेजी, प्रा. श्रीमती रजनी भागवतजी, प्रा. वेदपाठकजी आदि का मैं आभारी हूँ, जिन्होंने मुझे मार्गदर्शन किया ।

विलिंग्डन कॉलेज सांगली के सहृदय और उदारमना प्राचार्य डा. एच्. एस् निर्मले जी के प्रति भी मैं आभारी हूँ, जिनका उत्साहवर्धक प्रोत्साहन और आशिर्वाद मुझे सदैव मिलता रहा। विलिंग्डन कॉलेज के इतिहास विभाग के अध्यक्ष प्रा. चन्द्रहास खाडिलकरजी, तथा हिन्दी विभाग के मेरे सहयोगी प्रा. सुहास अंगापुरकरजी और सी. बी. शाह महिला महाविद्यालय, सांगली के प्रा. सिद्राम खोतजी का भी मैं हृदय से आभारी हूँ।

शोध कार्य पूरा करने के लिए मैंने शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर, विलिंग्डन कॉलेज सांगली तथा के. बी. पी. कॉलेज इस्लामपुर, चिंतामणराव व्यापार महाविद्यालय सांगली के पुस्तकालयों से ग्रंथ प्राप्त किये, अत: इन पुस्तकालयों के ग्रंथपालों के भी मैं आभार मानता हूँ।

श्री. दिपक जोशीजी को भी धान्यवाद देना नहीं भूला जा सकता, जिन्होंने अत्यन्त रुचि एवं श्रम से समस्त टंकन कार्य संपादित किया है। भविष्य में भी इन सब लोगों से आशीर्वादमयी सहयोग की कामना करता हूँ।

जैनेन्द्रजी के उपन्यासों के माध्यम में साहित्यकारमें विवरण करने का यह मेरा प्रथम प्रयास है, साठोत्तरी उपन्यासों का अध्ययन करके उसका स्वरूप अधिक व्यापक और स्पष्ट करने की मैंने चेष्टा की है। इसमें कमियाँ होंगी, यह स्वीकारने में मुझे संकोच नहीं है, जो कुछ कमियाँ हैं, वे मेरी अल्पज्ञानता की अपनी कमियाँ हैं - जो कुछ विशिष्ट हैं, वो गुरुजनों का प्रसाद है।

अत: अपनी अल्पज्ञानता की इस स्वीकृति के साथ यह लघु-शोध-प्रबन्ध मैं विद्वानों के शुभ आशीर्वाद हेतु प्रस्तुत करता हूँ।

विनीत,

[प्रा. बाजीराव लक्ष्मण पवार]
शोध-छात्र।

सांगली।
नवम्बर 30-11-1994।

जैनेन्द्रकुमार

जन्म : २ जनवरी, १९०५

मृत्यु : २४ दिसम्बर, १९८८